Indexed 1675
GENERAL IMPACT FACTOR
INTERNATIONAL PEER Reviewed JOURNAL
ISSUE-17 VOL-1 IMPACT - 2.2042 ISSN-2454-6283 July-September -2019

शोध-ऋतु

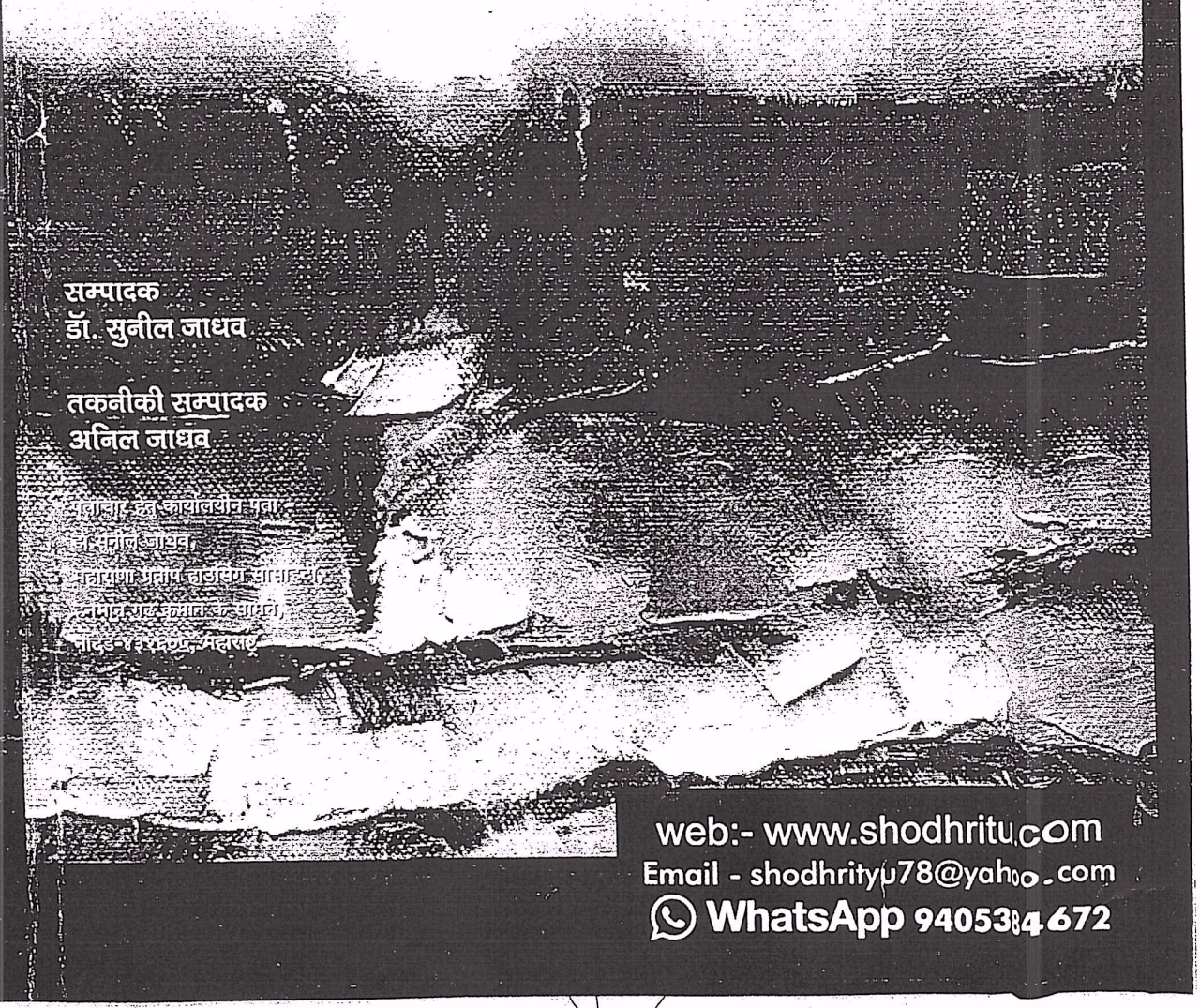

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405364672

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

अ नु क्र म णि का

1.भारत एवं बांग्लादेश गंगाजल बंटवारे की समस्याः एक भौगोलिक अध्ययन– डॉ. मधु यादव–05
2.ओम प्रकाष वाल्मिकी की कहानियों में दलित विमर्ष– डॉ. माया पोरवाल–08
3.भारतीय दर्शन में महिलाओं के लिए न्याय व्यवस्था और वर्तमान परिवेक्षण– पिंकी देशराज–13
4.कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में अभिव्यक्त स्त्री अस्मिता- तस्लीमा-शोधार्थी -18
5.उपन्यासों में नारी एवं वैवाहिक चेतना- डॉ॰ मोहन सिंह यादव-20
6.वैश्विक ताप में वृद्धिः एक बड़ी चुनौती–डॉ. मधु यादव–22
7.निर्मल पुतुल की कविता में आदिवासी स्त्री–प्रा. डॉ. शिवाजी सागोंळे–26
8.समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी विमर्ष–प्रा. डॉ. प्रमोद पाटील–29
9.राजनीतिक अपराधीकरण के प्रमुख मापदण्ड–डॉ0 राम कुमार त्रिपाठी–32
10.राष्ट्रीय चेतना का उद्भव एवं विकास-डॉ॰ मोहन सिंह यादव-37
11.बालश्रम समस्या एवं चुनौती–प्राचार्य डॉ0 पंकज कलासुआ–39
12.राजस्थानी संत साहित्य में सामाजिक समरसता–डॉ0 अमित चौधरी–43
13.डूंगरपुर राज्य में आस्था के प्रमुख केन्द्र–दिनेश कुमार पाटीदार–46
14.सन्त कवि के रूप में सुन्दरदास–पिंकल मीणा–51
15.'साकेत' महाकाव्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता–शिल्पी कुमारी सिंह–56
16.प्रेमचंद जी के उपंयासो में जीवन यथार्थ : परिवेश और मानसिकता–डॉ के सोनिया–60
17.गिद्धराज उपन्यास में आधुनिक एवं समकालीन बोध–डॉ0 राजीव कुमार–65
18.महिलाओं के उत्थान में डॉ0 अम्बेडकर का योगदान
(हिन्दू कोड बिल के विशेष सन्दर्भ में)-अनिष कुमार सोनकर-69
19.सिम्मी हर्षिता की कहानियों में चित्रित नारी जीवन संघर्ष-वैशाली सालियान- शोधार्थी-72
२०.नाभादास कृत भक्तमाल का संक्षिप्त परिचय-प्रकाशचंद्र (शोध छात्र)-74
21.गुरू ग्रन्थ साहिबः गुरू रविदास वाणी का प्रामाणिक प्रभावित स्रोत– डॉ. हरप्रीत कौर–77
22.सिनेमाः स्त्री संवाद व मध्यस्तता का सचेतन साधन- प्रा. भारती म. सानप-82

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

ISSUE-17 VOL-1 IMPACT -2.2042 ISSN-2454-6283 जुलाई-सितंबर,2019

22.सिनेमा: स्त्री संवाद व मध्यस्तता का सचेतन साधन

प्रा. भारती म. सानप,
अध्यक्ष , हिंदी विभाग,
शासकीय ज्ञान-विज्ञान महाविद्यालय,औरंगाबाद. 431 401

भारतीय सिनेमा माध्यम की दृष्टि से स्त्री-प्रतीमा को उजागर कर जनमानस में स्त्री को स्वतंत्रता का स्वर प्रदान करनेवाला महत्वपूर्ण माध्यम है. सिनेमा के सौ वर्ष व उसके बाद स्त्री-प्रतीमा से जुड़ी हुई बहुलांश फिल्मों ने स्त्री-संवाद व उसकी मध्यस्तता को एक पहचान बनाता स्वर व पृष्ठभूमि दी है. इस में प्राय: व्यावसायिक और कलात्मक फिल्मों के साथ-साथ स्त्री-संवेदना, उसकी आवश्यकताएँ, उसकी सुरक्षा व बुरी रूढ़ियाँ में फँसे उसकी अस्तित्व की पहचान का सच्चा स्वर, स्त्री पर बनी documentries और shortfilms को दिया जाता है. documentries और shortfilms ने स्त्री के अस्तित्व की पहचान के साथ उसकी परिधि को गुलामी में फाँसनेवाले कठिन केंचुल को तोड़ दिया है. इन विस्तृत व पहचान परक फिल्मों के कारण सिनेमा अधिक प्रभावपूर्ण बनता जा रहा है. यहाँ स्त्री केवल गमलाई सभ्यता का अंश न रहकर मीलों तक खुली भूमिपर अपनी स्वतंत्रता के हजारों बीज बो कर, अपनी वृक्ष की भाँति पनपनेवाली असीम बहार को देकर समाजपरिवर्तन का प्रमुख अंग बनने का सफल प्रयास कर रही हैं. युगों से आँखों पर पट्टी बँधी हुई उसके न्यायिक ईश्वरत्व को बंध मुक्त करने का प्रयास सिनेमा के माध्यम से हो रहा है.

समाज व्यवस्था में रची बसी एकाधिक रूढ़ियाँ, परम्पराएँ अंधविश्वास व आडंबर की नुकसानदेह प्रक्रिया है. जिसमें सर्वाधिक रूप में स्त्री की बलि चढ़ाई जाती है. स्त्री का जन्म, शरीर व वास्तव्य का वैसे कोई परिचयात्मक परिचय नहीं होता. उसका परिचय मात्र आदर्श व समर्पण के नाम बलि की एक यातनामय संसृति है. जिसे नकारना आज आवश्यक लग रहा है. क्योकि वह शिक्षा व व्यवसाय की सभी शाखाओं में अपनी स्वतंत्र पहचान बना चुकी है. जैसे कठिनाई व संघर्ष को पार करना वह जन्म से ही साथ लेती हुई आ रही हैं. उसकी युगों की यह साधना उसकी बलिवेदी को पार कर चुकी है. स्त्री महसूस कर रही हैं कि उसकी चाह, ईच्छा व विचार को स्वर मिलें, उसका संवाद मुक्त-स्वर ग्रहण करें, उसकी मध्यस्तता को पहचान मिलें. पुरुषसत्ताक भूमि पर उसकी चुप्पी संवाद में बदल जाए.

भारतीय सिनेमा ने स्त्री के उपरोक्त स्वर व उसकी वेदना की आह को संवाद देकर उसकी अनसुनी कर दी गई बात को विचारणीय बनाया है. सिनेमा का यह प्रयास स्त्री को युग परिवर्तन का केंद्र बनाने में भरकस सहायता कर रहा है. क्योंकि सिनेमा ने विविध सामाजिक स्तरों में वास्तव्य करनेवाली स्त्री के प्राय: सभी प्रश्नों पर तथा उपरांत उसके विकास में सहाय्यक आवश्यकताओं पर फ़िल्में बनाई हैं. इस में स्त्री की उपादेयता, उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व, स्त्री-पुरुष समानता तथा आदर्श व्यवस्था पर बल दिया गया है.

वर्तमान समाज व्यवस्था की विषमताओं में स्वयं को बचाती हुई, स्त्री हारती नहीं. वह प्राय: संपूर्ण स्त्री मानस प्रेरणा बनकर 'pink' के रूप में, 'गुलाबी गैंग' के रूप में अत्याचार व शोषण को रोकने का प्रयास खुद करती है. अनाचार से भरी हुई व्यवस्था, लोगों की सुरक्षा के बैच लगाकर घूमनेवाली सुरक्षा-व्यवस्था, सहाय्यता के बदले उसके शोषण पर उतारू है. फिर कौन, जो उसे जीने दे? अपनी आत्मनिष्ठा को जगाकर, आत्मविश्वास से भरकर 'संपतपाल देवी' अपने साथ-साथ अन्य स्त्रियों की भी उदधारक व संरक्षक बन जाती है. यह बहुत बड़ी घटना, स्थिति व पहचान है. इसे documentry film के माध्यम से पर्दे पर उतारकर स्त्री की पहचान को क्रांतिकारक स्वर मिला है.

यहाँ अब स्त्री केवल व्यवस्था का एक अबला व अपाहिज पुर्जा व अंश न रहकर उसकी सबल प्रतीमा सामने आयी है. स्त्री मन, उसका स्वातंत्र्य – जो मानसिक व शारीरिक दोनों स्तरों पर, उसके बलस्थान, उसकी परिस्थिति सापेक्ष कोशिशे, उसकी मातृत्व शक्ति, उसकी असीम समझदारी, उसके गुलाम के रूप में दबे हुए विविध परिप्रेक्ष, रूढ़िवादिता के विरोध में संघर्ष की कठिन परीक्षा आदि के रूप में उसका जीवन संवेदनशील पहलुओं की बोलती तस्वीर है. इसे अनदेखा नहीं

PRINCIPAL
Govt. College of Science
Aurangabad

ा जा सकता. स्त्री-स्वातंत्र्य को अनदेखा करके भुलावे में ा हुई सामाजिक व्यवस्था को कहीं-न-कहीं जरुर भारतीय मा ने उजागर कर स्त्री-विमर्श के जरिए और उसकी ान्य, सरल प्रतिमा के माध्यम से उसे नया संवाद दिया है. से सभ्यता में स्त्री के संबंध में नियमित मार्क की हुई रूढ़ियाँ ; मात्रा में जरुर विलुप्त होने में मदत हो रही है.

स्त्री-जन्म सुरक्षितता में कुछ मदत 'कन्यारत्न' cumentary की है. आज तक वह नन्हीं सी आवाज हमारा ुना करती है. माँ के गर्भ में भी वह सुरक्षित नहीं है. एक स्त्री के ए अपने का गर्भ को सुरक्षित रखने का अधिकार छीना हुआ है. ड़की बचाओ' का नारा लगाती हुई, कई documentries और ort film बनाई गई. परन्तु परिणाम अंशत: नजर आता है. ाराष्ट्र में जिला लातूर- गांव खारगांव के योगेश पाटील ने ाऊसाहेब कन्यारत्न योजना' बनाई, जिसमें लड़की के जन्म मय , हजार रुपये का fix deposit किया जाता है. उसके ठारह वर्ष बाद प्रस्तुत राशी शिक्षा तथा विवाह में काम आती है. ड़कियों के जन्म को प्राय: दहेज जैसी कुरीति के कारण नकारा ाता है. इस समस्या पर बनी 'कन्यारत्न' (save girl child) locumentary विशेष उल्लेखनीय हैं. इसके प्रचार-प्रसार से हाराष्ट्र के मराठवाडा में बालिकाओं के जन्म को अभिशाप ानने की प्रथा से जरुर कुछ मात्रा में छुट मिली है. प्रशासन में उसके जन्म से पहले की जाँच पर पाबंदियाँ लगे गई हैं. सुधार के इन नियमों को प्रभावित करता हुआ सिनेमा एक प्रभावी माध्यम के रूप में अपनी प्रतीमा का विकास कर रहा है.

सिनेमा में कुछ वर्ग की फिल्मों में भावबंध से जुड़ी हुई – माँ, बहन, पत्नी, प्रेमिका, वेश्या, असहाय्य निराधार स्त्री रूपों में प्रस्तुत स्त्री मात्र भाव-आन्दोलन का विषय रही है. उसकी त्याग, समर्पण की प्रतीमा पर्दे पर चलित होकर पुन: पुन: करुणा, वेदना के जाल में उसे बाँधे रखती हैं. यह चित्रण और उसकी प्र कुछ सामाजिक-वर्ग व संस्कृति नाम पर सस्ती, साधारण विचारधारा के उन्नायकों में उसे देवी, लक्ष्मी आदि देवताओं के नाम पर बाँधती है. इसके लिए स्त्री के कष्टदायी, त्याग व बलिदान के रूप को आवश्यक व समाजहित के लिए जरुरी मानते हैं. स्त्री की चुप्पी सधी हुई, प्रस्तुत प्रतीमा पत्थर व मिट्टी की मूर्ति है. क्यों! क्या उसे अपने अस्तित्व की पहचान से अनभिज्ञ रखने की आवश्यकता है? मनोरंजन के नाम पर स्त्री-प्रतीमा का गलत उपयोग भी उसकी मात्र उपयोगिता की ओर संकेत करता है. स्त्री यहाँ त्याग के समाजरूपी खंबे पर लटकाई गई वह मूर्ति है, जिंसे सभी ने करुणा व दया का लक्ष्य बनाया है. उसकी समर्पण में क्षीण, दुर्बल बनी हुई मूर्ति को जनसामान्य में दयाभाव से देवी पद पर प्रशंसा होती है. स्त्री के बलहीन, अबला, विवंचित स्त्री-जन्म को हीन व दुर्बल कर्मगति मानकर, उसे अनाचार व शोषण का माध्यम बनाकर प्रस्तुत करना अनुचित है. संस्कृति व स्त्री के प्रति सदाचार का यह अनमेल प्रस्तुतिकरण है.

भारतीय सिनेमा में सन् 1931 से स्त्री व स्त्री-पुरुष समानता के बारे में कुछ विचारप्रेरक फ़िल्में बनाई हैं. उनका उल्लेख यहाँ जरुरी है, इसमें 1. दुनिया न माने (1937), 2. अछूत कन्या (1936), 3. आदमी (1939), 4. देवदास (1935), 5. इंदिरा एम्. ए. (1934) 6. बाल योगिनी (1936) उल्लेखनीय फ़िल्में हैं. इन फिल्मों ने स्त्री-जीवन की परंपरागत गुलाम के रूप में उद्बोधित समस्याओं को हटाने का प्रयास किया. इन में जातिभेद, वेश्यावृत्ति करती हुई स्त्री से विवाह, स्त्री शिक्षा की आवश्यकता आदि विषयों पर अपने विचार दिए गए हैं. इस तरह की समाज विकास में सहाय्यक फिल्मों के कारण समाज मानस में प्रगल्भता का सभावेश होने में सहाय्यता हुई.

स्वतंत्रता के पश्चात् सिनेमा के स्वरुप व प्रारूप में बदलाव आया. कुछ आज की documentary जैसी फिल्मों ने अपना विशेष परिचय रखा. इसमें सन् 1953 में सोहराब मोदी द्वारा बनाई गयी फिल्म 'झाँशी की रानी', सन् 1955 में बंगाली भाषा में बनी फिल्म 'पथेर पांचाली' समाजप्रेरक, समाजउद्धार के रूप में 'मील का पत्थर' मानी जाती है. सन् 1951 विश्वविख्यात निर्माता व दिग्दर्शक राज कपूर की कुछ विशेष स्त्री-प्रधान फ़िल्में – आवारा, श्री 420, चोरी चोरी, सत्यम् शिवम् सुंदरम्, प्रेमरोग आदि में स्त्री-प्रतिमा का विकासात्मक पहलू दिखाकर रूढ़ि के बोझ को उतारा गया है. एक नया संदेश उनकी फिल्मों की पहचान रही हैं.

सन् 1982 से स्त्री-प्रधान फिल्मों में महाराष्ट्र में मराठी भाषा में बनी, जब्बार पटेल द्वारा दिग्दर्शित व स्वर्गीय अभिनेत्री स्मिता पाटील के सजीव व संवेदनशील अभिनय से अभिनीत फिल्म 'उंबरठा' महत्वपूर्ण फिल्म है. समाजसेवा व स्त्री-जीवन सुरक्षितता भाव से प्रेरित स्त्री-प्रतिमा के उद्वेलन को चित्रित कर, इस फिल्म ने स्त्री-समाज के प्रति सभी का ध्यान खींच लिया है. बाद में 'सुबह' नाम से इसका हिंदी प्रारूप भी प्रदर्शित हुआ. अभिनेत्री स्मिता पाटील की बहुलांश कलात्मक-

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

वर्ग की फ़िल्में मध्यवर्गीय व साधारण दरिद्रावस्था में जीवनयापन करती हुई, स्त्री के लिए बनाई गई चौकट को नकारती,क्रांतिकारी स्त्री के रूप को प्रदर्शित करनेवाली फ़िल्में समाज पहचान के मूल्य को निर्धारित करती हुई नजर आती हैं.

अभिनेत्री शबाना आजमी द्वारा अभिनित फ़िल्में अर्थ, पार आदि ने स्त्री-स्वातंत्र्य, स्त्री-संवाद व स्त्री-उपस्थिति को लक्षित करती हुई दिखायी देती हैं. इन में से कुछ फिल्मों ने स्त्री की अबोल प्रतिमा को गीतों के माध्यम से संवाद देकर स्त्री की तस्वीर को नयापन व संवेदना के द्वारा ऊँचाई पर ले जाने का प्रयास उल्लेखनीय है. स्त्री का संघर्ष मात्र बाहरी समाजजीवन का ही नहीं अपितु उसका मानसिक-संघर्ष उसे तपती रेत पर बारिश के छिडकाव का आल्हाद देते हुए कवि या शायर उसकी बेरुखी को काव्य रूपी संवाद में बदल देता है. इस के कारण समाज में उसके स्थान को बल मिलता है. उसकी मानसिक उलझन, दबी हुई संवेदना आकार ग्रहण करने के लिए तैयार होती है. जैसे—

- तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो,
क्या गम है जिसको छुपा रहे हो

  ■ कवि कैफ़ी आजमी
फिल्म 'अर्थ' (1982)

- झुकी झुकी सी नजर बेक़रार है के नहीं,
दबा दबा सा सहीं दिल में प्यार है के नहीं

  ■ कवि कैफ़ी आजमी
फिल्म 'अर्थ' (1982)

युगों से मीलों चलकर स्त्री-समय ने केवल दबाव, गुलामी व पारतंत्र्य ही पाया है. उसकी सभी अनचाही बातों को अपने में समाविष्ट करने की संयमित प्रतिमा ने अपने चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट से भरा चेहरा रखा है. यहीं मुस्कुराहट उसके स्वत्व से संवाद कर उसके गरिमामयी रूप को आकार देती है. उसकी इस चुप्पी व संवाद के बीच में एक महीन पर्दा है, जिसका आंदोलन भारतीय सिनेमा ने संवेदनशील परंतु स्त्री के विकास के पहलुओं से जोड़कर प्रस्तुत किया है.

आज सिनेमा ने – भारत की पुत्री (India's doughter), अच्छी पत्नी (A good wife), बाल विवाह (Child marriage), मंथन (The churning), गुलाबी गैंग, Mango girls, बाम, The world before her, सलमा, Doughter of mother india, Driving with selvi, The forgotten woman, भाग House wife भाग, दसवी दुनिया, The holy wives, हिंडोला(Swing), पानीहारी(The water woman), The great indian marriage bazaar और Teaspoon आदि स्त्री-प्रधान documentries और short film बनाकर स्त्री जीवन के विस्तृत जगत में प्रवेश कर उसे सुधार की, विकास की, क्रांति की, स्वत्व की पहचानपरक दृष्टि प्रदान की है. इनका योगदान सराहनीय है. संस्कृति में विकासात्मक जीवनमूल्य जोड़ने का इनका प्रयास उल्लेखनीय है.

वर्तमान में उड़ान भरती हुई स्त्री-मानस की संवेदना भरकस रूप में कहीं न कहीं दबी हुई है. कामकाजी महिला घर, कार्यालय के बीच पारिवारिक खिंचाँव को व्यवस्था देने में बोझ से दबी हुई हैं. House wife परिवार के जाल में व पति के आर्थिक बोझ को कम करने के लिए घरेलु व्यवसाय कर स्वयं के अस्तित्व से अपरिचित हो रही हैं. 'Teaspoon' short film की कहानी इसी House wife का प्रतिनिधित्व करती है. प्रस्तुत 'पुरस्कार प्राप्त' short film 'अबन भरुचा – देवहंस' द्वारा लिखित व दिग्दर्शित है. नायिका कविता घरेलु महिला है. पति Insuarance company में काम करता है. घर में पति-पत्नी व नब्बे साल का ससुर है. बुढा ससुर पॅरेलैसिस के कारण अपाहिज, बिस्तर पर पड़ा हुआ है. 'कविता' घर में ससुर की देखभाल, घर के सारे काम व इनके साथ-साथ सौंदर्यवर्धक क्रीम के Marketing का व्यवसाय कर आर्थिक रूप में भी अपना योगदान रखती है. वह अपाहिज ससुर के कारण घर के बाहर नहीं जा सकती .वास्तव में देखा जाय तो वह अनकही जेल में कैद आधुनिक नारी हैं. वह कुछ दिनों के लिए इससे मुक्ति चाहती हैं. पर उसके पति के कहें के अनुसार बूढ़े अपाहिज पिता को छोड़कर वह कहीं नहीं जा सकती. बोल न सकनेवाला ससुर 'teaspoon' से टक टक की आवाज़ कर संकेत देता हैं. दिन भर की 'टक टक' से, घरकाम से, छीने गए स्वातंत्र्य से , बोझ बने हुए घर के सदस्य से, पति की तानों से. उसकी हर बात को अनसुनी कर पति के द्वारा कर्तव्यविमूढ़ होने से 'कविता' एक दबावग्रस्त मानसिकता की शिकार होने पर मजबूर दिखाई गई है. 'कैविता' की चुप्पी परेशानी में बदलकर रोज की 'teaspoon' की 'टक टक' ध्वनि से क्रोधित होकर अंत में ससुर की तकिए से दबाकर हत्या कर देती है. ससुर की मृत्यु पर जोर जोर से दहाड़कर रोती है. यह उसकी आतंरिक दबी हुई चुप्पी है. जिसे उसका पति रोने का नाटक कहकर उसे अपमानित कर देता है. इतने कष्ट, एक

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

हत्यारन का बोझ ढोती हुई 'कविता' फिर भी अपने को संयमित कर लेती है. पति के लिए चाय, खाने का प्रबंध करती है. पुन: 'teaspoon' की 'टक टक' ध्वनि सुनकर हैरान, दुखी, भयभीत होकर ससुर के कमरे की तरफ दौडती है. 'टक टक' की ध्वनि का संकेत डायनिंग टेबल की ओर से सुनकर देखती है, पति चाय की प्लेट 'teaspoon' से बजा रहा है. कविता क्रोधित होकर देखती रहती है, इस कहानी से स्पष्ट है कि ' स्त्री की उपस्थिति, उसका संवाद कोई मायने नहीं रखता. उसे गुलाम की भाँति केवल ऑर्डर दिया जाता है.' नवीन युग की पढ़ी लिखी स्त्री – कहाँ है? उसकी खंडाला जाने की छोटी सी इच्छा गुलामी करने के बाद भी पूरी नहीं होती. दयनीय अवस्था की शिकार यह स्त्री पता नहीं किन-किन संघर्षों से गुजर रही है. एक प्रगतिपरक भाव को लेकर यह shortfilm बनाई गई है. विचारप्रेरक व सराहनीय है.

कुछ सत्य घटनाएँ तथा कुछ काल्पनिक कहानियों पर बनी ये फ़िल्में स्त्री-समस्या व स्त्री-सुधार के स्वर को प्रभावी बनाती है. वर्तमान सामाजिकता के गतिशील परिवर्तन को इन फिल्मों ने कुशलता के साथ स्त्री-जागृति के संवाद को प्रस्तुत कर महत्वपूर्ण बनाया है.

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad